दिनांक 4 मई, 2022 को "आजादी का अमृत महोत्सव" के अवसर पर एनईसी द्वारा आयोजित "नार्थ-ईस्ट फेस्टिवल" के समापन समारोह में राज्यपाल प्रोफेसर जगदीश मुखी जी का अभिभाषण

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी,

असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा जी,

माननीय केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग तथा आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल जी,

माननीय केंद्रीय कानून और न्याय मंत्री श्री किरण रिजिजू जी,

माननीय केंद्रीय डोनर मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी जी,

पूर्वोत्तर राज्यों के माननीय राज्यपाल गण,

माननीय मुख्यमंत्री गण,

माननीय केंद्रीय डोनर राज्यमंत्री श्री बी. एल. वर्मा जी,

केंद्र और राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी गण,

एवं उपस्थित देवियो और सज्जनो !

"आजादी का अमृत महोत्सव" की एक कड़ी के रूप में एनईसी द्वारा आयोजित "नॉर्थ ईस्ट फेस्टिवल" के इस समापन समारोह में आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आज इस समारोह में हमारे आदरणीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी पधारे हुए हैं। इसीलिए हम और अधिक प्रसन्न एवं आनंदित हैं। मैं

इस अवसर पर आदरणीय राष्ट्रपति जी को हार्दिक अभिनन्दन एवं धन्यवाद देता हूं।

मैं "नॉर्थ-ईस्ट फेस्टिवल" के सफल आयोजन के लिए माननीय केंद्रीय डोनर मंत्री, पूर्वोत्तर राज्यों के सभी माननीय मुख्यमंत्रियों और विशेष रूप से क्षेत्र के लोगों को बधाई देना चाहता हूं।

मैं उन सभी लोगों को हृदय से धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने इस फेस्टिवल को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है।

मित्रो !

यह आनंद का विषय है कि पूरा देश "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है। हम आजादी के अमृत काल में अपने नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से एक "श्रेष्ठ" एवं "आत्मनिर्भर" भारत के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। 75 वर्षों की इस यात्रा में हमने बहुत कुछ हासिल किए हैं। ये हमारे पूर्वजों के प्रयत्नों की बदौलत ही संभव हो पाए हैं। इसलिए मैं इस पावन अवसर पर अपने पूर्वजों एवं सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करता हूँ।

देवियो और सज्जनो !

आप भलीभांति जानते हैं कि पूर्वोत्तर भारत जनजाति-बहुल क्षेत्र है। यहां विभिन्न जनजाति के लोग रहते हैं। प्रत्येक जन-समुदाय की अलग जीवन-शैली है। परन्तु सांस्कृतिक रूप से सभी एक सूत्र में बंधे हुए हैं। पूर्वोत्तर की जीवन-शैली देश-दुनिया में एक अलग पहचान रखती है। पूर्वोत्तर की लोक-कला, लोक-नृत्य, पोशाक, रहन-सहन एवं खानपान भी अलग हैं। हर फेस्टिवल के दौरान जनजातीय लोगों की अपनी पारंपरिक जीवन-शैली की रंगीन तस्वीरें दिखाई देती हैं। मेरा विश्वास है कि इस "नार्थ ईस्ट फेस्टिवल" के माध्यम से पूर्वोत्तर के लोगों को एक नयी ऊर्जा एवं प्रेरणा मिली होगी।

भौगोलिक रूप से पूर्वोत्तर के सभी राज्य, देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये कई पड़ोसी देशों के साथ 5,000 किलोमीटर से अधिक की अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र आर्थिक रूप से भी काफी महत्वपूर्ण है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ अच्छे आर्थिक संबंध बनाने में यह क्षेत्र अहम् भूमिका निभाने वाला है। पूर्वोत्तर का जितना विकास होगा, देश उतना ही मजबूत होगा। मुझे अत्यंत खुशी है कि केंद्र सरकार नार्थ ईस्ट के सर्वांगीण विकास पर सर्वाधिक ध्यान दे रही है।

मित्रो !
आप भलीभांति जानते हैं कि "उत्सव और त्योहार" पूर्वोत्तर के जन-जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। हालांकि पूर्वोत्तर के लोग उत्सवप्रिय हैं। इस क्षेत्र के लोग अपनी पारंपरिक रीति-नीति के साथ, पूरे वर्ष के दौरान अनगिनत उत्सवों एवं त्योहारों को मनाते हैं, जो पूर्वोत्तर की जीवंत एवं इंद्रधनुषी संस्कृति का बोध कराते हैं।

मैं यदि पूर्वोत्तर में मनाए जाने वाले त्योहारों की बात करूं तो इनमें "असम" के बिहू उत्सव, खेराई उत्सव, जोन-बिल मेला, ब्रह्मपुत्र महोत्सव, "नागालैंड" के हॉर्नबिल, मोआसू, सेकेरनेई फेस्टिवल, "अरुणाचल प्रदेश" के सोलुंग, लोसार, मोपिन, शरद ऋतु महोत्सव, ब्रह्मपुत्र दर्शन महोत्सव, मेघालय के शाद-सुक-मायनसीम, वंगाला, का-पोम्बलंग-नोंगक्रेम उत्सव, "मिजोरम" के चपचार कुट, मीम कुट, कालकूट त्योहार, "मणिपुर" के डोल-जात्रा, लाई-हरोबा, त्रिपुरा" के खारची पूजा, अशोकाष्टमी और सिक्किम के माघ संक्रांति, सोनम लोचर आदि प्रमुख हैं।

मित्रो !
पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार हमेशा प्रयत्नशील रही है। यही वजह है कि अब राज्य सरकारें भी दुगुने उत्साह के साथ विकास के कामों को पूरा करने

में तत्पर दिख रही हैं। पहले की अपेक्षा अब डोनर मंत्रालय के कामों का भी दायरा बढ़ गया है।

मित्रो !
प्राकृतिक संसाधनों, जैव-विविधताओं, दुर्लभ वन्य-जीवों एवं वनस्पतियों के साथ ही अपनी समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत के लिए "पूर्वोत्तर भारत" हमेशा अग्रणी रहा है। संभवतः इसीलिए हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पूर्वोत्तर को "अष्ट लक्ष्मी" कहा है और अपने संबोधन में वे पूर्वोत्तर का बार-बार जिक्र करते हैं। यह उनके पूर्वोत्तर के प्रति आत्मिक जुड़ाव को दर्शाता है। पूर्वोत्तर वास्तव में देश का समृद्ध क्षेत्र है।

मैं इस मौके पर माननीय केंद्रीय मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी जी, पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय, भारत सरकार और केंद्रीय राज्य मंत्री श्री बी.एल. वर्मा जी के अथक प्रयासों की सराहना करता हूं, जिन्होंने अपनी सेवाओं से पूर्वोत्तर को लगातार लाभ पहुंचाने का काम किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनके निरंतर प्रयासों से पूर्वोत्तर क्षेत्र के सतत् एवं समग्र विकास की गति में और तेजी आएगी।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि माननीय केंद्रीय मंत्री और पूर्वोत्तर राज्यों के सभी माननीय मुख्यमंत्रियों के बीच, विशेष रूप से इम्फ्रस्ट्रक्चर के विकास को लेकर एवं क्षेत्र में चल रही परियोजनाओं को गति देने के लिए कई दौर की चर्चाएँ हुई हैं।

मित्रो !
सन् 1971 में एनईसी की स्थापना से इस क्षेत्र को बहुत लाभ हुआ है। असम सहित पूरे पूर्वोत्तर में स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, परिवहन, संचार, बिजली, रेशम उत्पादन, सिंचाई आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एनईसी की अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। पूर्वोत्तर राज्यों के सामाजिक-आर्थिक और बुनियादी विकास में एनईसी के योगदानों की मैं सराहना करता हूँ और अपेक्षा रखता हूं कि पूर्वोत्तर के विकास की यात्रा आगे भी ज़ारी रहेगी।

मित्रो !
पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ औद्योगिक विकास को बढ़ावा देना - केंद्र और राज्य सरकारों का सामूहिक प्रयास है। इसी क्रम में पूर्वोत्तर के सभी आठों राज्यों को कवर करते हुए एनईसी द्वारा "इंद्रधनुष गैस ग्रिड परियोजना" शुरू की गई थी। ट्रंक लाइन की क्षमता बढ़ाने के लिए न्यू जलपाईगुड़ी-लामडिंग के हवाईपुर-लामडिंग सेक्शन के दोहरीकरण के लिए एक रेलवे परियोजना एनईसी द्वारा ली गई है। अरुणाचल प्रदेश में "हुनली से अनिनी", "सिंगर रिवर से सिज़ोह नाला" और "पासीघाट से पांगिन" तक निर्मित - तीन सड़क परियोजनाओं ने आसपास के क्षेत्रों के पर्यटन स्थलों को भी विकसित किया है।

हाल ही में "भवानीपुर एनएच -31" से सौदरभिठा आनंद बाजार होते हुए "मानस नेशनल पार्क" तक, रोड के निर्माण का काम पूरा होने से न केवल बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी, बल्कि पर्यटन में भी वृद्धि होगी, जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का विकास होगा।

मित्रो !
पूर्वोत्तर परिषद ने शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र के विकास के लिए कई परियोजनाओं को पूरा किया है। इनमें क्षेत्रीय नर्सिंग कॉलेज गुवाहाटी, डाउन टाउन कॉलेज, पानीखेती में शैक्षणिक सुविधाओं के लिए इम्फ्रस्ट्रक्चर का विकास और सोनारी में 100 बेड वाले अस्पताल का निर्माण प्रमुख हैं। इन परियोजनाओं से न केवल शिक्षा क्षेत्र को लाभ मिलेगा, बल्कि स्वास्थ्य क्षेत्र में भी व्यापक सुधार होगा।

डिब्रूगढ़ में एक चाय संग्रहालय और बिहगुरी, सोनितपुर में एक मिनी स्टेडियम भी एनईसी द्वारा बनाए गए हैं।

मित्रो !

आजादी के इस अमृत काल में पूर्वोत्तर की जनता, इस क्षेत्र के विकास की गति को महसूस करने लगी हैं। केंद्र सरकार, पूरे पूर्वोत्तर के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दे रही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि केंद्र सरकार, राज्य सरकारों एवं नागरिकों की सामूहिक व सक्रिय भागीदारी से इस क्षेत्र के विकास की धारा निरंतर गतिमान रहेगी और निश्चित रूप से हमारा पूर्वोत्तर, देश एवं पूर्वी आसियान क्षेत्र के लिए "विकास इंजन" बनेगा।

आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द।